"धुर की वाणी"

"वाणी गुरू - गुरू है वाणी - विच वाणी अमृत सारे ।
गुरवाणी कहे सेवक जन माने - परतख गुरू निसतारे ।"

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

गुरू साहब फरमा रहे ने कि ब्राहमण्ड में अगर कोई प्राप्त करन वाली कोई चीज है ते ओ है "गुरू"। गुरू ही इस

मनुष्य नूं काल रूपी संसार तो बाहर कड के उस परमात्मा नूं मिलाण दा रस्ता दसदा है । उसनूं परमात्मा दे दर्शन करवांदा है । गुरू ही मनुष्य नूं चउरासी लख योनियां दे चक्कर तों पार करवांदा है ।

गुरू साहब बार-बार मनुष्य नूं समझांदे नें कि गुरू दी कीमत अनमोल है गुरू दी कोई कीमत ही नहीं है और न ही कोई गुरू दी कीमत अदा कर सकदा है । गुरू ही मनुष्य (जीव) नूं इस जंजाल तों कडण दी चाबी है क्योंकि गुरू ही मार्ग दर्षक है, गुरू ही परमात्मा है, गुरू ही सर्वेश्वर है क्योंकि गुरू ही परमात्मा दा ज्ञान करवांदा है ।

सदियों से गुरू इस धरती ते मनुष्य दे रूप विच आंदे नें ताकि इस मनुष्य नूं उस पारब्रहम-परमेश्वर नाल मिलाण वास्ते, ताकि ऐ (जीव) भटकदा न रहे । लेकिन गंदी नाली दा कीड़ा नाली विच ही रह कर के खुश है आप कीड़े नूं नाली तों कड के बाहर रख दो लेकिन ओ फिर ओथे ही वापिस चला जांदा है, ओ उस विच ही आपणा सभ कुछ समझदा है ।

इसी प्रकार मनुष्य को जितना समझाया जाए वह जितनी देर भी सत्संग में बैठे उतनी देर ही उसका ध्यान परमात्मा की तरफ आकर्षित होता है सत्संग खत्म होने के बाद वह फिर अपने परिवार जनों के साथ मिलकर वैसे का वैसा ही हो जाता है ।

क्योंकि मनुष्य नें अपनी जरूरत की चीजों को बढ़ा लिया है वह परमात्मा को नहीं मांगते या उस राह पर नहीं चलना चाहते जो राह गुरू बताता है । वह गुरू की बात उतनी देर तक मानते हैं जितनी देर वह गुरू के सामने बैठे रहते हैं उसके बाद सभ कुछ वैसे का वैसा रहता है ।

गुरू साहब बार-बार मनुष्य को समझाते हैं कि बेटा मनमुखी नहीं बनना, गुरूमुखी बनना है । मन की चालों में नहीं आना क्योंकि मन की एक जरूरत पूरी होती है और दूसरी शुरू हो जाती है वह कभी भी चैन नहीं लेने देता । उसे काँच की चीजें चाहिए जो कि नाशवान हैं और जो मिट्टी में मिल जायेंगी । गुरू की वाणी ही मनुष्य को मन की चालों से बचा कर रखती है जो कि उस आत्मा पर पड़ी जंग को साफ करती है उस आत्मा को हिलाती (झंझोड़ती) है और उसे बताती है कि तूं तो उस परमात्मा का ही एक अंश है जो उससे बिछुड़ गई है।

गुरू ही मनुष्य को शब्द या नाम दान देते हैं जो कि मनुष्य की पहली सीढ़ी है मनुष्य को बाहर मुखी बनाते हैं ताकि उसको पता चल सके कि परमात्मा को प्राप्त करने का रास्ता क्या है और मनुष्य को उसमें रम जाना चाहिए उस गुरू के बताये हुए मार्ग पर चल देना है क्योंकि गुरू पूर्ण सत्य है गुरू ही परमात्मा है ।

मनुष्य गुरू के बताये हुऐ रास्ते पर चल कर पूर्णता बाहर मुखी बन जाता है तो उसे तभी अन्दर का ज्ञान प्राप्त होने लगता है क्योंकि यह बाहर मुखी बाणी अन्दर काम नहीं करती, अन्दर तो एक अलग तरह की धुन है जो परमात्मा से मिलाप करती है । हमें पूर्ण रूप से गुरू के हुक्म में आना है जो ढाई अक्षर पढ़ कर पडित बन जाते हैं वह तो उनका मालिक के प्रति प्रेम है जो कि पूर्ण रूप से उन पर न्यौछावर हो जाता है । जब तक हम पूर्ण रूप से गुरू के हुक्म में या गुरू के नहीं हो जायेंगें तब तक धुर दरगाह से आ रही वाणी के बारे में पता नहीं चल सकता । हमें अपनी आपसी परिवारिक गांठों को खोलना है उसमें उलझ कर नहीं रह जाना है । मनमुख से गुरूमुख बनना है । मनुष्य को गुरू का हर वक्त शुक्र गुज़ार होना चाहिए कि वह हरदम अपने प्यारों के पास रहता है और उसे काल की गर्म हवाओं से बचाए रखता है । गुरू का कहना मानना, हुक्म में रहना, मन की चालों में नहीं आना, खोटियां (गण्डा) गाठें नहीं डालना, लालच नहीं करना, सच बोलना, सतगुरू का शुक्र गुज़ार होना, भजन सिमरन में रोज़ समय लगाना, हक हलाल की कमाई खाना, खोटे कर्म नहीं करने चाहिये आदि गुरू की बताई हुई बातें हैं ।

गुरू साहब कह रहे हैं कि मनुष्य का ध्यान गुरू की बाहर मुखी वाली वाणी पर लग गया और वह उसमें रम गया तो उस

मनुष्य (जीव) का गुरू साक्षात्कार हो गया यानि कि वही गुरू वाला हो गया । गुरू साहब कहते हैं कि अगर तूं मेरा हो गया तो मैं तेरा हो गया, तुझे मेरे सिवाय कुछ नहीं दिखना चाहिए और जो तेरी जरूरत है वह मेरी जरूरत हो गई, अब तूं आगे आगे और मैं तेरे पीछे हूँ । गुरू की रहमत हो जाये तो उसे दुनियादारी वाली कमाई की जरूरत नहीं उनके पास तो ग्राहक अपने आप आता है बच्चे और बीबी अपने आप ही नेक बनना शुरू हो जाते हैं क्योंकि परमात्मा मिल गया तो वह अनमोल मोती मिल गया जो कि परमात्मा के ताज में चमकने वाला मोती है ।